

अब भागाभागको बतलाते है। - सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग लेश्यारहित जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तेजोलेश्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मलेश्यावाले जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण शुक्ललेश्यावाले जीव हैं । कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमें से एक खंडको पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके घटाकर पृथक् रक्खे हुए एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहाँ जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुंजमें मिला देने पर कृष्णलेश्यावाले जीवों का प्रमाण होता है। शेष एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीललेश्यावाले जीवों का प्रमाण होता है । शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर कापोतलेश्यावाले जीवों का प्रमाण होता है। अनन्तर कापोतलेश्यावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।

सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसेगखंडं सासणसम्माइट्टिणो । एवं णील-किण्हलेस्साणं पि भागाभागं कायव्वं । तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदां सेसेगभागो । पमत्तापमत्तसंजदा सुक्कलेस्सियरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ ।

शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार नील और कापोतलेश्यावालों का भी भागाभाग कर लेना चाहिये। तेजोलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। पञ्चलेश्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं। शुक्ललेश्याके राशिके संख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत आदि जीव हैं।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। सत्थाणे पयदं। किण्ह-णील-काउलेस्सिय-मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा। सासणादीणमोघभंगो। सब्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो। विक्खंभसूर्इ असंखेज्जगुणा। सेढ्ढी असंखेज्जगुणा। दव्वमसंखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। सासणादीणमोघं। एवं चेव पम्म-सुक्कलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं। सत्थाणं गदं।

परत्थाणे पयदं। सब्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो। सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो।

तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाइड्डिणो
अणंतगुणां एवं णील-किण्हाणं । सव्वथोवा तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदां पमत्तसंजदा संखेज्जगुणां
असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमें से स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालों के स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, कृष्ण, नील और कापोतलेश्याके राशियों से उनके भागहार स्तोक नहीं हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं। तेजोलेश्याके मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हीं की विष्वंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जगत्श्रेणी विष्वंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। द्रव्य जगत्श्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगत्प्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगत्प्रतरसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं। इसीप्रकार पद्मलेश्या और शुक्ललेश्यावालों के स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- कापोतलेश्याके असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सबसे स्तोक है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हीं का द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे कापोतलेश्याके मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणा हैं। इसीप्रकार नील और कृष्णलेश्याके जीवों के परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये। तेजोलेश्याके अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल प्रमत्तसंयतों से असंख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतों का

अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं का द्रव्य अवहारकालसे

द्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थाणभंगो । एवं पम्मलेस्साए । सुक्कलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेव्वली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइड्डि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छाइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेव्वली संखेज्जगुणा । सुक्कलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सिय-असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो

असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये। इसीप्रकार पन्नलेश्याके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। शुक्ललेश्यामें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उपशामकों से संख्यातगुणा हैं। सयोगिकेव्वली जीव क्षपकों से संख्यातगुणा हैं। अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेव्वलियों से संख्यातगुणा हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं। असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल प्रमत्तसंयतों से असंख्यातगुणा है। मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है। संयतासंयतों का अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियों के

अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं का द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पत्योपमतक ले जाना चाहिये। इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उपशामकों से संख्यातगुणा हैं। सयोगिकेवली संख्यातगुणा हैं। शुक्ललेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सयोगियों से संख्यातगुणा हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं। पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव शुक्ललेश्यक प्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं। पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीवों से संख्यातगुणा हैं। तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीवों से संख्यातगुणा हैं। तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं। तेजोलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयतों से

असंखेज्जगुणो ।	सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो	संखेज्जगुणो ।
पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो	असंखेज्जगुणो ।	सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो ।	सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो	संखेज्जगुणो ।
काउलेस्सियअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो		असंखेज्जगुणो ।
किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो		असंखेज्जगुणो ।
णीललेस्सियअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो	विसेसाहिओ ।	काउलेस्सियसम्मामिच्छाइड्ढिअवहार- कालो असंखेज्जगुणो ।
सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो		संखेज्जगुणो ।
किण्हलेस्सियसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो		असंखेज्जगुणो ।
णीललेस्सियसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो	विसेसाहिओ ।	किण्हलेस्सियसासणसम्माइड्ढिअवहार- कालो संखेज्जगुणो ।
णीललेस्सियसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो		विसेसाहिओं
तेउलेस्सियसंजदासंजदअवहार-कालो	असंखेज्जगुणो । ^१	(प्रतिषु 'प्रमत्त०' इति पाठः ।)
पम्मलेस्सियसं जदासंजदअवहारकालो		

एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो तेउलेस्सियमिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। पम्मलेस्सियमिच्छाइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। तेउलेस्सियमिच्छाइड्ढि-विक्खंभसूई संखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। पम्मलेस्सियमिच्छाइड्ढिदव्वमसंखेज्जगुणं। तेउलेस्सियमिच्छा-इड्ढिदव्वं संखेज्जगुणं। पदरमसंखेज्जगुणं। लोगो असंखेज्जगुणो। अलेस्सिया अणंतगुणा। काउलेस्सिया अणंतगुणा। णीललेस्सिया विसेसाहिया। किण्हलेस्सिया विसेसाहिया। एसो सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरुवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तं जुत्ती वक्खाणं वा।

एवं लेस्साणुवादो गदो।

असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल उन्हीं के असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल उन्हीं के मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल उन्हीं के सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है। शुक्ललेश्यक संयतासंयतों का अवहारकाल उन्हीं के सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं का द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल असंख्यातगुणा है। पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है। उन्हीं की विष्कं भसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवों की विष्कं भसूची पद्मलेश्यक जीवों की विष्कं भसूचीसे संख्यातगुणी है। जगत्श्रेणी तेजोलेश्यक विष्कं भसूचीसे असंख्यातगुणी है। पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियों का द्रव्य जगत्श्रेणीसे असंख्यातगुणा है। तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवों का द्रव्य पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है। जगत्प्रतर तेजोलेश्यक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। लोक जगत्प्रतरसे असंख्यातगुणा है। लेश्यारहित जीव लोकसे अनन्तगुणा हैं। कापोतलेश्यक जीव लेश्यारहित जीवों से अनन्तगुणा हैं। नीललेश्यावाले जीव कापोतलेश्यक जीवों से विशेष अधिक हैं। कृष्णलेश्यक जीव नीललेश्यक जीवों से विशेष अधिक हैं। यह सर्व परस्थान अल्पबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है। परंतु इस विषयमें सूत्र, युक्ति अथवा व्याख्यान नहीं पाया जाता है।

इसप्रकार लेश्यानुवाद समाप्त हुआ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि
त्ति ओघं ^१ (भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्ट्यादयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः। स.सि.
१, ८. तेण विहिणो सव्वो संसारी भव्वरासिस्स।। गो. जी. ५६०.) ॥१७२॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो। णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासि।
भवसिद्धियमिच्छाइट्टिभजिदं तेसि। वग्गं च सव्वजीवरासिसुवरि पक्खित्ते
भवसिद्धियमिच्छाइट्टिधुवरासी होदि।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ^२ (अभव्या अनन्ताः। स.सि. १,
८. अवरो जुत्ताणंतो अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं।। गो. जी. ५६०.) ॥१७३॥

एत्थ अणं तवयणं संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं। एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण वुत्तं ?
ण एस दोसो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा। वयाभावो वि^३ (प्रतिषु 'वयाभावादि' इति पाठः।) तेसिं
मोक्खाभावादो अवगम्मदे।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ॥१७२॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है। इतना विशेष है कि अभव्यसिद्धिक जीवराशिसहित सिद्धराशि
और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उक्त राशियों के वर्गमें भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि
राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि
धुवराशि होती है।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥१७३॥

यहाँ सूत्रमें अनन्त यह वचन संख्यात और असंख्यातके प्रतिषेधकेलिये दिया है।

शंका -- यहाँ भव्य मार्गणामें अभव्यों का प्रमाण समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा प्रमाण
क्यों नहीं कहा?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है।, क्योंकि, अभव्यसिद्धों का व्यय नहीं होता उनका व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है।

शंका -- अभव्यों का प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

खेतपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडीकरणट्ठं
खेतपमाणं वुच्चदे। एसो पुण अभवसिद्धियरासिपमाणेण सुट्ठु परिप्फुडो। कुदो?
अभवसिद्धियरासिपमाणं जहण्णजुत्ताणं तमिदि सयलाइरियवियप्पसिद्धत्तादो।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिणो।
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा
अभवसिद्धिया। सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो। सेसमोघभंगो।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। भवसिद्धियसत्थाणं परत्थाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि
जाव अजोगिकेवलि ति ओघं। अभवसिद्धियसत्थाणं णत्थि।

सव्वपरत्थाणे सव्वत्थोवा अजोगिकेवली। चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा। एवं जाव
पलिदोवमं ति णेयव्वं। तदो अभवसिद्धिया अणंतगुणा। णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया
अणंतगुणा। भवसिद्धियमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा।

एवं भवियमग्गणा समत्ता।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है। परंतु यह अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट है,
क्यों कि, अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण जघन्य युक्तानन्त है, यह सर्व आचार्योंके वचनों से
जगत्में सिद्ध है।

अब भागाभागको बतलाते हैं। - सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
अभव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक
और अभव्यसिद्धिक विकल्परहित जीव होते हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
अभव्यसिद्धिक जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि
जीव हैं। शेष भागाभाग ओघ भागाभागके समान हैं।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमें से भव्यसिद्धिक जीवों का स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघ स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके समान है। अभव्यसिद्धिक जीवों का स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें अयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। चारों उपशामक अयोगियों से संख्यातगुणा हैं। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे अभव्यसिद्धिक जीव अनन्तगुणा हैं। भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित जीव अभव्यसिद्धिक जीवों से अनन्तगुणा हैं। भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव उनसे अनन्तगुणा हैं।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई।

छ. ६०

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि
त्ति^१ (प्रतिषु '-केवली' इति पाठः।) ओघं ॥१७४॥

केण कारणेण? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादो। ण हि सामण्णवदिरित्तो तव्विसेसो अत्थि।
तम्हा ओघपमाणपरुवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तव्वा।

खइयसम्माइट्टिसु असंजदसम्माइट्टी ओघं^२(सम्यक्त्वानुवादेन
क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टयः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः। स.सि. १, ८. वासपुधत्ते
खइया संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे। तो संखपल्लठिदिये केवदिया एवमणुपादें।
संखावलिहिदपल्ला खइया॥ गो. जी. ६५७-६५८.) ॥१७५॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्टिरासी ओघअसंजदसम्माइट्टिरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो,
तो वि ओघपरुवणं लभदे; पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं पडि विसेसाभावा।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसं तकसायवीदरागच्छदुमत्था दव्वपमाणेण
केव्वडिया संखेज्जा³ (संयतासंयतादय उपशान्तकषायान्ताः संख्येयाः। स.सि. १, ८.)

॥१७६॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियों में असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेव्वली गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ॥१७४॥

शंका -- सम्यक्त्वी जीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेव्वली गुणस्थानतक
ओघप्ररूपणाकेसमान किस कारणसे हैं?

समाधान -- क्योंकि, यहाँ पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है। सामान्यको छोड़कर
उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं। इसलिये ओघप्रमाणकी प्ररूपणाही निश्शेष यहाँ पर कहना
चाहिये।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियों में असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१७५॥

यद्यपि यह क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि राशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके असंख्यातवें
भागमात्र है तो भी वह ओघप्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पत्योपमके असंख्यातवें भागत्वके
प्रति उक्त दोनों राशियों में कोई विशेषता नहीं है।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छन्नस्थ गुणस्थानतक
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥१७६॥

पुव्वसुत्तादो खइयसम्माइट्ठि ति एत्थाणुवट्टे। ओघपमाणं णाहिरेदि¹ (प्रतिषु 'ओघपमाणं
पूरेदि ति' इति पाठः।) ति जाणावणट्ठं संखेज्जवयणं । संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो कधं
संखेज्जा ? ण, तेसिं मणुसगइवदिरित्तसेसगईतु अभावादो। पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत्तं
घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय तिरिक्खेसु उववज्जं ता लब्भंति तेणर (प्रतिषु 'संजदा' इति पाठः।)
संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो असंखेज्जा लब्भंति ति चे? ण, पुव्वं बद्धाउअखइयसम्माइट्ठीणं
तिरिक्खेसुप्पण्णाणं संजमासंजमगुणाभावादो। कुदो? भोगभूमिमं तरेण तेसिमुप्पतीए अण्णत्थ

संभवाभावादो । ण च तिरिक्खेसु दंसणमोहणीयखवणा वि अत्थि, ‘णियमा मणुसगईए’ इति वयणादो ।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ^३ (चत्वारः क्षपकाः सयोगकेवलिनोऽयोगकेवलिनश्च सामान्योक्तसं ख्याः । स.सि. १, ८.) ॥१७७॥

एत्थ चउण्हं कम्माणं घाइसण्णिदाणं खवगा इदि अज्झाहारो कायव्वो । चउसदो गुणट्ठाणाणं विसेसणं किण्ण होदि ति वुत्ते ण, तत्थ छट्ठीणिदेसाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति होती है । क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत आदि राशियाँ ओघप्रमाणका अनुकरण नहीं करती, इसलिये इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें ‘संख्यात हैं’ यह वचन दिया है ।

शंका -- संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात कैसे हैं ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य गतिको छोडकर शेष गतियों में नहीं पाये जाते है । और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते है । , इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव भी संख्यात ही होते हैं, ऐसा कहा ।

शंका -- जिन जीवों ने पहले तिर्यचायुका बंध कर लिया है ऐसे जीव सम्यक्त्वको ग्रहण करके और दर्शनमोहनीयका क्षय करके तिर्यचों में उत्पन्न होते हुए पाये जाते है । , इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात होना चाहिये ।

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जिन्हों ने पहले तिर्यचायुका बन्ध कर लिया है ऐसे तिर्यचों में उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियों के संयतासंयतगुण नहीं पाया जाता है, क्योंकि, भोगभूमिके बिना अन्यत्र उनकी उत्पत्ति संभव नहीं हैं । तथा तिर्यचों में दर्शनमोहनीयको क्षपणा भी नहीं पाई जाती है । , क्योंकि, दर्शनमोहनीयकी क्षपणा नियमसे मनुष्यगतिमें ही होती है, ऐसा आगमवचन है ।

चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१७७॥

यहाँ पर क्षपक पदसे घातिसंज्ञक चारों कर्मोंके क्षपक, ऐसा अध्याहार कर लेना चाहिये ।

शंका -- सूत्रमें आया हुआ ‘चउ’ शब्द गुणस्थानों का विशेषण क्यों नहीं होता है?

सजोगिकेवली ओघं ॥१७८॥

कुदो? खइयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असं जदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसं जदा ति ओघं^१
(क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असं यतसम्यग्दृष्टयादयोऽप्रमत्तान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स.सि. १,
८. ततो य वेदमुवसमया । आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥ गो. जी. ६५.)
॥१७९॥

एत्थ ओघरासी चेव त्थोवूणो२(प्रतिषु 'त्थोदूणो' इति पाठः ।) वेदगरासी होदि तेणोघत्तं ण
विरुज्झदे ।

उवसमसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदा ओघं^३

(औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असं यतसम्यग्दृष्टिसं यतासं यताः पल्योपमासं ख्येयभागप्रमिताः ।
स.सि. १, ८.) ॥१८०॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदाणमसं खेज्जदिभागमेत्ता जदि वि
होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि ति ओघमिदि भणिदं । सेसं
सुगमं ।

समाधान -- ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, 'चउ' शब्दमें षष्ठी
विभक्तिका निर्देश नहीं बन सकता है। अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'चउण्हं' यह प्रद प्रथमा
विभक्तिरूप है, षष्ठी नहीं, इसलिये गुणस्थानों का विशेषण नहीं हो सकता है। शेष कथन
सुगम है।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ॥१७८॥

चूं कि सयोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते हैं।, इसलिये उनका
प्रमाण ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टियों में असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक
जीव ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ॥१७९॥

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है।

उपशमसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१८०॥

ये दोनों भी राशियां ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतों के असंख्यातवें भागप्रमाण होती है।, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतों की ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतों के साथ समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है। शेष कथन सुगम है।

 पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ति दव्वपमाणेण
 केवडिया, संखेज्जा^१ (प्रमत्ताप्रमत्तसंयताः संख्येयाः। चत्वार औपशमिकाः
 सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १,८.) ॥ १८१ ॥

एत्थ संखेज्जवयणं ओघपमाणपडिसेहफलं । ओघदव्वपमाणं ण पावेदि ति
 कधमवगम्मदे? ओघपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागो तम्हि तम्हि उवसमसम्मा-इड्डिरासी होदि ति
 अप्पाबहुगवयणादो ।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १८२ ॥

सम्मामिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८३ ॥

मिच्छाइट्ठी ओघं ^२ (सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयो मिथ्यादृष्टयश्च
 सामान्योक्तसंख्याः। स. सि. १,८. पल्लासंखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु। मिस्सा
 तेहि। विहीणो संसारी वामपरिमाणं ॥ गो.जी. ६५९) ॥१८४॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि ओघम्मि परुविदाणि ति णेह परुविज्जं ति । एत्थ
 अवहारकालुप्पायणविहि। वत्तइस्सामो । ओघअसंजदसम्माइड्डिअवहारकाले

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतरागछन्नास्थ गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहाँ सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन ओघप्रमाणके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शंका -- प्रमत्तादि उपशान्तकषाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ओघ द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- 'ओघ प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती राशिके संख्यातवें भाग उस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ।' इस अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके वचनसे जाना जाता है कि प्रमत्तसंयत आदि उपशान्तकषायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररुपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १८२ ॥

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररुपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १८३ ॥

मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररुपणाके समान अनन्तानन्त है ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रों का प्ररुपण ओघप्ररुपणाके समय कर आये है । , इसलिये यहाँ उनका प्ररुपण नहीं करते हैं । अब यहाँ पर अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं । --

आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिते वेदगअसंजदसम्मा-
इद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे खइय-
असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे असं-
जदउवसमसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे
सम्मामिच्छाइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरुवेहि गुणिदे सासणसम्माइद्धिअवहारकालो
होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइद्धिसंजदासंजदअवहारकालो होदि
। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइद्धिसं जदासं जदअवहारकालो होदि
। एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति ।

सिद्धतेरसगुणद्वाणरासिं मिच्छाइडिरासिभजिदतव्वगं च सव्वजीवरा-सिस्सुवरि पक्खित्ते
मिच्छाइडिधुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइडिणो होंति ।
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगअसंजदसम्माइडिणो ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअसंजदसम्माइडिणो । सेसमसं खेज्जखंडे कए बहुखंडा
उवसमअसंजदसम्माइडिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो
लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर वेदक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल
होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टियों का
अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर असंयत
उपशमसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने
पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर
सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने
पर वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों का अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे
गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों का अवहारकाल होता है। इन अवहारकालों से
पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती है।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित उन राशियों
के वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियों की धुवराशि होती है।

अब भागाभागको बतलाते है। - सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमें से बहुभाग
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं। शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टि जीव है। शेष एक भागके
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात
खंड करने पर बहुभाग उपशम असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक

बहुखंडा सम्मामिच्छाङ्घ्रिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माङ्घ्रिणो । सेसमसं
 खेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्माङ्घ्रिसंजदासंजदा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा
 उवसमसम्माङ्घ्रिसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्माङ्घ्रिसं जदासंजदा ।
 सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा ।
 सेसं जाणिय वत्तव्वं अप्पबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सव्वेसिं सत्थाणमोघं । परत्थाणे
 पयदं । सव्वत्थोवा वेदगसम्माङ्घ्रि-अप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ।
 असंजदसम्माङ्घ्रिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअव-हारकालो असंखेज्जगुणो ।
 तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । उवसमसम्माङ्घ्रि-सु सव्वत्थोवा
 चत्तारि उवसामगा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि
 वेदगपरत्थाण-भंगो । खइयसम्माङ्घ्रि-सु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसावगा । खवगा संखेज्जगुणा ।
 अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा ।
 असंजदसम्माङ्घ्रिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं ।
 पलिदोवमसंखेज्जगुणं केवलणाणिणो अणंतगुणा

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड
 करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
 वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
 उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
 क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसं
 यत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष
 भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमे से सभीका
 स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघप्ररुपणाके समान है । अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है -
 वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक है । इनसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणा हैं ।
 इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे संयतासंयतों का
 अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हीं का द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार

पल्योपमतक ले जाना चाहिये। उपशमसम्यग्दृष्टियों में चारों उपशामक सबसे थोड़े है। अप्रमत्तसंयत जीव उपशामकों से संख्यातगुणा है। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा है। इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियों के परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं। क्षपक उनसे संख्यातगुणा है। इनसे अप्रमत्तसंयत संख्यागुणा है। इनसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणा है। इनसे संयतासंयत संख्यातगुणा है। इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इससे उन्हीं का द्रव्य असंख्यातगुणा है। इससे पल्योपम असंख्यातगुणा है। इससे केवलज्ञानी अनन्तगुणा है।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा उवसमसम्माइड्डिणो चत्तारि उवसामगा। तत्थेव खइयसम्माइड्डिणो संखेज्जगुणा। खवगा संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदउवसमसम्माइड्डिणो संखेज्जगुणा। कारणं, चारित्तमोहणीय-खवणकालादो उवसमसम्मत्तकालस्स संखेज्जगुणत्ता। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। अपमत्तसंजदा खइयसम्मा-इड्डिणो संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। वेदगसम्माइड्डिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्ता संखेज्जगुणा। खइयसम्माइड्डिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदाणं संखेज्जाभागमेत्तपमत्तसंजदवेदग-सम्माइट्ठीहि। तो कधं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्माइड्डिसंजदासंजदाणं संखेज्जगुणत्तं ? ण, सव्वसम्मत्तेसु संजदेहि। तो देससंजदाण देससंजदेहि। तो असं जदाणं बहुत्तुवलं भादो। तं पि कुदो? चारित्ता-वरणखओवसमस्स सव्वसम्मत्तेसुपाएणसं भवाभावादो। 'तेरसकोडी देसे' एदीए

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक है। उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे संख्यातगुणा है। क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियों से संख्यातगुणा है। अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवों से संख्यातगुणा है।, क्योंकि, चरित्र मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल संख्यातगुणा है। प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियों से संख्यातगुणा हैं। अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियों से संख्यातगुणा हैं। प्रमत्तसंयत

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियों से संख्यातगुणा है। वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा है। वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा है। क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा है।

शंका -- प्रमत्तसंयतों के संख्यातबहुभाग मात्र प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियों से मनुष्य संयतासंयतों के संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणा कैसे हो सकते हैं ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वों में संयतों से देश संयत और देशसंयतों से असंयत जीव बहुत पाये जाते हैं, इसलिये मनुष्य संयतासंयतों के संख्यातवें भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव प्रमत्तसंयतों के संख्यातवें भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियों से संख्यातगुणा बन जाते हैं।

शंका -- सर्व सम्यक्त्वों में संयतों से संयतासंयत और संयतासंयतों से असंयत बहुत होते हैं, यह कैसे जाना जाता है?

गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होउ णाम। कधं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भइत्तं ? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरं परागयस्स एदीए गाहाए णाभइत्तं काउं सक्किज्जदि, अइप्पसं गादो । वेदगअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । वेदगसम्माइड्डिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमसम्माइड्डिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो खइयसम्माइड्डिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा । मिच्छाइड्डिणो अणंतगुणा

एवं सम्मत्तमग्गणा गदा

समाधान -- चूंकि चरित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्यक्त्वों में प्रायः संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वों में संयतों से संयतासंयत और संयतासंयतों से असंयत जीव अधिक होते हैं ।

शंका -- यदि ऐसा है तो 'देशसंयतमें तेरह करोड मनुष्य है।' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायेगा?

समाधान -- यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होओ ।

शंका -- तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परं परासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा ।

वेदकसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों से असंख्यातगुणा है । क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है । वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों का अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों का अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतों का द्रव्य उन्हीं के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पत्योपमतक ले जाना चाहिये । पत्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणा हैं । मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियों से अनन्तगुणा हैं ।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहिं सादिरेयं
॥१८५॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय। तेसिं
संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति। तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि सादिरेया ।
एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । तं जहा- देवअवहारकालादो पदरं गुलमेगं घेत्तूण संखेज्जखंडे
करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसबहुखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सण्णि-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि ।
एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था ति ओघं ^१ (संइ
णानुवादेन संज्जिषु मिथ्यादृष्टयादयः क्षीणकषायान्ताश्चक्षुर्दर्शनवत् । स. सि. १,८. देवेहिं
सादिरेगो रासी सण्णीणं होदि परिमाणं ॥ गो.जी.६६३.) ॥ १८६ ॥
सुगममेदं सुत्तं ।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता^२ (असंज्जिनो मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः ।
तदुभयव्यपदेशरहिताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १,८. तेणूणो सं सारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं
॥ गो.जी. ६६३.) ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियों में मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं?
देवों से कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी ही होते हैं। तथा उनके
संख्यातवें भागप्रमाण तीन गतिसम्बन्धी संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। इसलिये संज्ञी
मिथ्यादृष्टि जीव देवों से कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है।

अब यहाँ पर अवहारकालका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है- देव अवहारकालमें एक
प्रतरां गुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमें से एक खंडको निकालकर
शेष बहुखंड उसीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल होता है । इस
अवहारकालसे जगत्प्रतरके भाजित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१८६॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥१८७॥

अणंताणं ताहि ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥१८८॥

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि अवगदत्थाणि ति एदेसिं ण वक्खाणं वुच्चदे । एत्थ धुवरासिं वत्तइस्सामो । सण्णिरासिं णेव-सण्णि-णेव-असण्णिरासिं च असण्णिभाजिदत्तवग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । तं जथा-सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असण्णिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति । सेसमसं खेज्जखंडे कए बहुखंडा सण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमोघभागाभागभंगो ।

तिविहमवि अप्पाबहुगं जाणिरुण भाणिदव्वं ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघं^१

(आहारानुवादेन आहारकेषु मिथ्यादृष्टयादयः सयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १,८. तद्विवरीदसं सारी सव्वो आहारपरिमाणं ॥ गो.जी. ६७१.) ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥१८८॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥१८९॥

इन तीनों ही सूत्रों का अर्थ अवगत है, इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है । अब यहाँ पर धुवराशिका प्रतिपादन करते हैं । - संज्ञीराशि और संज्ञी तथा असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशों

से रहित जीवराशिको तथा असंज्ञी राशिसे भाजित उक्त राशियों के वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर असंज्ञी जीवों के प्रमाण लानेकेलिये ध्रुवराशि होती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं। वह जैसे- सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमें से बहुभाग असंज्ञी जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमें से बहुभाग संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशों से रहित जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष भागाभागका ओघ भागाभागके समान कथन करना चाहिये।

तीनों प्रकारके अल्पबहुत्वका भी जानकर कथन करना चाहिये।

इसप्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेव्रली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥१९०॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । णवरि सगुणपडिवण्णअणाहाररासिं आहारिमिच्छा-
इट्ठिरासिभजिदतव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते आहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभं गो१ (अनाहारकेसु
मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टयसंयतसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः । सयोगिकेव्रलिनः संख्येयाः ।
स.सि. १, ८. कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं ॥ गो.ज्जी.५७१.) ॥१९१॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । ओघमिच्छाइट्ठिधुवरासिमंतोमुहुत्तेण
गुणिदे अणाहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए
असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि
। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि
संखेज्जरुवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण
गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे
अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे
अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

यह भी सूत्र सुगम है । इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक जीवराशिको तथा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित उक्त राशियों के वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर आहारक मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण लानेकेलिये ध्रुवराशि होती है ।

अनाहारकों में मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेव्रली जीवों का प्रमाण कार्मणकाययोगियों के प्रमाणकेसमान है ॥१९१॥

यह भी सूत्र सुगम ही है । अब यहाँ ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं । - ओघ मिथ्यादृष्टियों की ध्रुवराशिको अन्तमुहूर्तसे गुणित करने पर अनाहारक मिथ्यादृष्टियों के प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि होती है । ओघअसं यतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आहारक संयतासंयतों का अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल होता है ।

अजोगिकेव्रली ओघं ^१ (अयोगिकेव्रलिनः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.) ॥१९२॥

सुगममेदं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसेगखंडं अप्पमत्तसंजदा होंति ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण। तत्थ सत्थाणं मूलोघभंगो। परत्थाणे पयदं ।
सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा। खवगा संखेज्जगुणा। सजोगिकेव्वली

अनाहारक अयोगिकेव्वली जीव ओघप्ररूपणाकेसमान हैं ।।१९२।।

यह सूत्र सुगम है।

अब भागाभागको बतलाते है। - सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक बन्धयुक्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अबन्धक जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष एक भाग प्रमाण अप्रमत्तसंयत जीव हैं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमें से स्वस्थान अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वकेसमान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । क्षपक जीव उपशामकों से संख्यातगुणा हैं । सयोगिकेव्वली आहारक क्षपकोंसे

आहारिणो संखेज्जगुणा। अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा। पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा।
आहारिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो। आहारिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो
असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो
आहारिमिच्छाइड्ढिणो अणंतगुणा । अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगिकेव्वलि ।

असंजदसम्माइड्विवहारकालो असंखेज्जगुणा । सासणसम्माइड्विवहारकालो असंखेज्जगुणा । तस्सेव दब्बमसंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा अणंतगुणां बंधगा अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा अणाहारिसजोगिकेव्वली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । (खवगा) संखेज्जगुणा । आहारिसजोगिकेव्वली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिअसंजदसम्माइड्विवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्विवहारकालो असंखेज्जगुणो ।

संख्यातगुणा हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेव्वली आहारकों से संख्यातगुणा हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल प्रमत्तसंयतों से असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतों का अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं का द्रव्य उन्हीं के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणा हैं । अनाहारकों में सयोगिकेव्वली जीव सबसे स्तोक हैं । अनाहारक असंयत-सम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल अनाहारक सयोगिकेव्वलियों से असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादन-सम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं का द्रव्य उन्हीं के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणा हैं । बन्धक जीव अबन्धकों से अनन्तगुणा हैं ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- अनाहारक सयोगिकेव्वली जीव सबसे स्तोक हैं । चार गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव अयोगिकेव्वलियों से संख्यातगुणा हैं । क्षपक जीव उपशामकों से संख्यातगुणा हैं । आहारक सयोगिकेव्वली जीव क्षपकों से संख्यातगुणा हैं । अप्रमत्तसंयत जीव आहारक सयोगिकेव्वलियों से संख्यातगुणा हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतों से संख्यातगुणा हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल प्रमत्तसंयतों से असंख्यातगुणा है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है।

आहारिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो। संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो। अणाहारि-असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। अणाहारिसासणसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं। एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति। तदो अबंधगा अणंतगुणा। अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइद्धिणो अणंतगुणा। तदो आहारिणो मिच्छाइद्धिणो असंखेज्जगुणा।

एवं दव्वाणिओगद्वारं समत्तं ।

संयतासंयतों का अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल संयतासंयतों के अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियों का अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। उन्हीं का द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणा हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकों से अनन्तगुणा हैं । इनसे आहारक बन्धक जीव असंख्यातगुणा हैं ।

इस प्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ।
